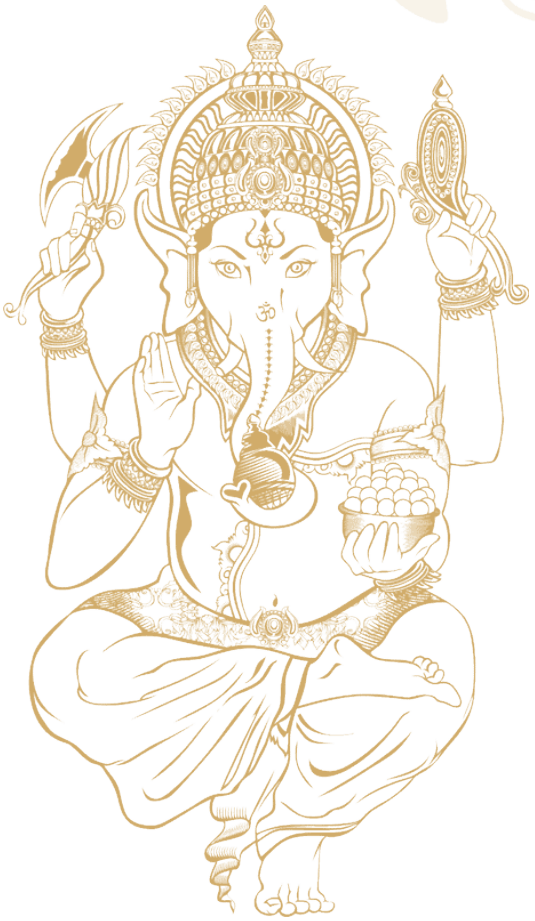

Ankur Kumar Gupta

21 Nov 2025

05:09 PM

Gopalganj

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121297901**

तिथि 21/11/2025 **समय** 17:09:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Gopalganj **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:11
अक्षांश 26:28:00 उत्तर **रेखांश** 84:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:07:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	21:19:39 घं
वेलान्तर	00:14:09 घं
सूर्योदय	06:15:59 घं
सूर्यास्त	17:00:22 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	2
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	सुकर्मा
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नो-नौनिहाल
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	शनि
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

बुध 14वर्ष 11मा 17दि

बुध

21/11/2025
08/11/2040

बुध	06/04/2026
केतु	04/04/2027
शुक्र	01/02/2030
सूर्य	09/12/2030
चन्द्र	09/05/2032
मंगल	07/05/2033
राहु	24/11/2035
गुरु	01/03/2038
शनि	08/11/2040

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 4मा 24दि

भद्रिका

21/11/2025
17/04/2030

भद्रिका	26/12/2025
उल्का	27/10/2026
सिद्धा	17/10/2027
संकटा	26/11/2028
मंगला	15/01/2029
पिंगला	27/04/2029
धान्या	26/09/2029
भ्रामरी	17/04/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			08:36:11	वृष	कृतिका	4	सूर्य	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			05:11:37	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	मित्र राशि	1.29	मातृ	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			18:15:47	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	नीच राशि	1.26	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		अ	18:03:33	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	स्वराशि	1.09	भातृ	भातृ	जन्म
बुध	व	अ	02:36:56	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.00	पुत्र	ज्ञाति	मित्र
गुरु	व		00:46:21	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	0.99	कलत्र	धन	मित्र
शुक्र			24:01:14	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	स्वराशि	1.13	आत्मा	कलत्र	मित्र
शनि	व		00:58:40	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	1.02	ज्ञाति	आयु	मित्र
राहु	व		20:55:54	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		20:55:54	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

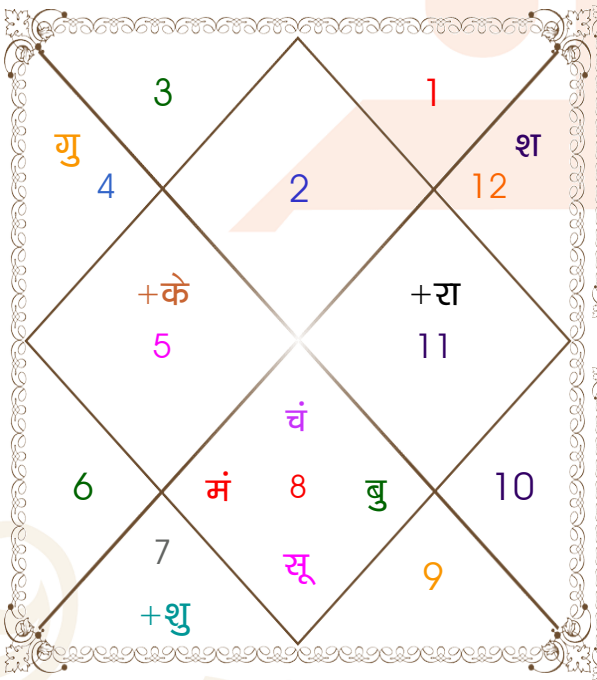

चन्द्र कुंडली

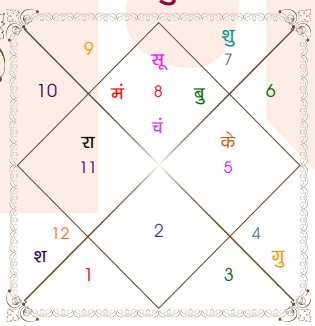

नवमांश कुंडली

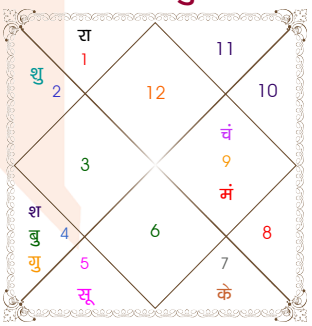

सर्वाष्टकवर्ग

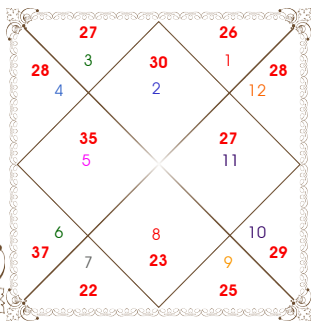

दशमांश कुंडली

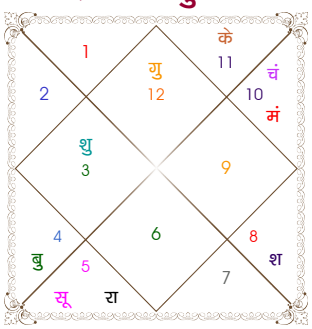

नक्षत्रफल

आप ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण राक्षस, योनि मृग, नाड़ी आद्य तथा वर्ग सर्प रहेगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "नो" या "नौ" अक्षर से होगा।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ हैं। अतः इस नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न जातक बड़े भाई के लिए अनिष्टकारी होता है। अतः जन्म समय में ही शास्त्रीय विधि से इस नक्षत्र की शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न कराने चाहिए तथा 27 दिन के बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन इसके दशांश का हवन कराना चाहिए। इस प्रकार पूर्ण विधि विधान से इसकी शान्ति करके इसका अनिष्ट प्रभाव हीन हो जाता है।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप अपने समाज में एक ख्याति प्राप्त पुरूष होंगे तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी आपका शरीर भी कान्ति तथा लावण्यता से युक्त रहेगा जिससे शारीरिक सुन्दरता की वृद्धि होगी। नाना प्रकार के धनैश्वर्य से युक्त रहकर आप एक समर्थवान पुरूष होंगे। आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा जीवन में प्रसन्नता पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आप एक पराक्रमी व्यक्ति भी रहेंगे तथा अन्य सभी लोग आपका प्रभुत्व स्वीकार करेंगे। समाज में आप लोकमान्य एवं श्रेष्ठ प्रतिष्ठा के धनी समझे जाएंगे एवं सभी लोग आपको हृदय से सम्मान अर्पित करेंगे। भाषण देने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगे तथा श्रोताओं को प्रभावित करने में पूर्ण सफल रहेंगे।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

यदा कदा आप अत्याधिक मात्रा में क्रोध का प्रदर्शन करेंगे जिससे आपको आर्थिक तथा सामाजिक हानि होगी। समाज में अन्य जनों से आपके प्रेमपूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे।

आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति भी होंगे तथा ईश्वर एवं धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा तथा विश्वास रखेंगे।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक क्रोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा। अतः इनमें आप स्वयं प्रधान एवं लोकप्रिय रहेंगे। आपका स्वभाव सन्तोषी रहेगा तथा जो भी उपलब्ध हो उसी पर सन्तोष करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। लेकिन धार्मिक क्रियाओं का पूर्ण रूपेण आचरण करते हुए भी क्रोध पर आप नियंत्रण करने में सर्वदा असफल रहेंगे।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरक्रोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

लेखन कार्य के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। अतः काव्य लेखन में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। आप में सहनशीलता का भाव भी पूर्ण रूपेण विद्यमान रहेगा तथा सुख-दुख को समान रूप से समझने में आप सफल रहेंगे। आप एक चतुर एवं चालाक व्यक्ति होंगे तथा चतुराई से अपने कार्यों को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। निम्न श्रेणी की लोगों की आपके प्रति मन में हमेशा श्रद्धा की भावना रहेगी।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका वक्षस्थल विशाल तथा नेत्र सुन्दर तथा बड़े बड़े होंगे। साथ ही शरीर के वर्ण में अल्प श्यामलता का समावेश होगा। आपके हाथ या पैर में मछली के आकार का कोई चिन्ह रहेगा तथा हाथ की रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की रहेंगी। गुरूजनों तथा पिता से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा इनसे सहायता तथा स्नेह की प्राप्ति होती रहेगी। बाल्यावस्था में आप काफी बीमार भी रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र तथा चतुर रहेगी अतः अपनी बुद्धि चातुर्य से सरकार के किसी ऊंचे पद को प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे। आप क्रूर तथा कठोर कार्यों को करने में रूचिशील रहेंगे। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों में आप कार्य कर सकेंगे। यदा कदा आप स्वभाव से अत्यन्त ही कुटिलता का प्रदर्शन करेंगे जिससे कई लोग आपसे कष्टप्राप्त करेंगे रहेंगे। क्रूरकर्मों के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गुप्त रूप से इनको प्रोत्साहित करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका पेट एवं मस्तक भी आकार में विस्तृत दृष्टिगोचर होगा। आप में लोलुपता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपका शरीर केमाल तथा लावण्यता से युक्त रहेगा। धर्म तथा ईश्वर के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा। नहीं करेंगे। आपकी दाढी तथा नाखून चोट से ग्रस्त रहेगे। धनैश्वर्य से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही आप विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में दक्ष रहेंगे।तथा किसी न किसी कार्य को को सम्पन्न करते रहेंगे। बन्धुओं से आपको हीती रहेगी। आप के पराक्रम को समाज में अन्य जन हृदय से स्वीकार करेंगे। आपका स्वभाव कोधी भी रहेगा।साथ ही सामाजिक जनों से आपके प्रेमपूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी मुकददमे या अन्य समस्या में आप सरकार के द्वारा धन हानि को प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अपने बड़े परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी सुख प्रदान करेंगे। स्त्रियों के विषय में आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे। इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान, सहयोग तथा लाभार्जन में सफलता प्राप्त होगी। राजकीय सेवा का अवसर आपको जीवन में प्राप्त होगा। आपके चित में हमेशा अन्य जनों के धन को पाने की इच्छा की बहुलता रहेगी तथा इसके लिए भी प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप एक दृढ संकल्पी व्यक्ति होंगे तथा जिसके विषय में एक बार सोच लेंगे उसे पूर्ण करके ही रहेंगे। साहस का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा निर्भयता पूर्वक अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

यदा कदा आपके मन में मनोरंजन या अन्य कारणों से जुआ आदि खेलने की इच्छा भी उत्पन्न होगी परन्तु इसमें आपको आर्थिक हानि ही रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की अधिकता के कारण विवाद आदि करने के लिए भी आप हमेशा उद्यत रहेंगे। आप हृदय से कमजोर होंगे। जीवन में आप दुर्लभ अवसरों पर ही शान्ि की अनुभूति कर सकेंगे अन्यथा अपने को अशान्त सा महसूस करेंगे।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

बचपन से ही आप प्रवासी रहेंगे तथा घर से बाहर अन्य स्थान में निवास करेंगे। अपने बन्धु तथा सम्बन्धियों के प्रति आपके मन में सहयोग भाव रहेगा। समर्थ पुरूष होने के कारण धनार्जन करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ की बातें अधिक मात्रा में बोलने वाले होंगे। आपका हृदय भी कठोर रहेगा तथा दया एवं करूणा की भावना का इसमें अल्प ही रहेंगी। आपकी प्रवृति साहसी तथा अकारण ही शीघ्र क्रोधित होने की होगी तथा छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगे। अन्य लोगों से आप समय समय पर वाद विवाद करते रहेंगे। शरीर से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा बल का आप में अभाव नहीं रहेगा।

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से पीड़ित रह सकते हैं। देखने में आपका स्वरूप भी सामान्य सुन्दर रहेगा। कभी कभी आपकी वाणी अत्यन्त ही कठोर रहेगी जिससे सुनने वाले अप्रसन्न होंगे। अतः आपको आपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का यत्पूर्वक उपयोग करना चहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय होगी तथा प्रत्येक कार्य को स्वच्छन्दता पूर्वक बिना किसी हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगे। आपकी प्रवृति शान्त होगी तथा उपद्रवादि करने में आपकी बुद्धि नहीं रहेगी। आपके आजीविका के साधन भी अच्छे कार्यों से सम्बन्धित रहेंगे। सत्य एवं धर्म के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी एवं जीवन में इसका पालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। अपने स्वजनों के प्रति आपका हार्दिक स्नेह तथा लगाव रहेगा एवं इनके आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी प्रवृति साहसी तथा शूरवीरता से युक्त रहेगी एवं वाद विवादों में आप प्रायः विजय ही प्राप्त करेंगे।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं

होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान या अन्य शुभ कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए तथा नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए साथ ही सोमवार के उपवास भी करने चाहिए। सोना, मूंगा, तांबा, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन, गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में रहेंगे। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से कराने पर भी अशुभ प्रभाव नष्ट होंगे तथा लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।